तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है

तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,
चिट्ठी में लिखा बेटा आ जा जो चाहए तुम्झे आ कर ले जा
अब तेरी बारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

वैष्णो धाम से आई चिट्ठी याहा आनंद समाया
जन्मो के मेरे पुण्ये फले जो माँ ने दर पे बुलाया
मेहँदी वाली हाथो से लिखी ममता से शिंगारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

सुंदर भवन में शेर सजा के बैठी है महारानी,
जल्दी से तू आजा बेटा कहती मात भवानी,
मैंने भी माँ से मिने की करली तयारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

मन मोहक ये पर्वत झरने गुण तेरा माँ गाये,
वान गंगा का बेहता पानी सब का मन हर्षाये,
काले काले छाए बादल बड़ी शोभा न्यारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

ख़ुशी के मारे रेह न पाऊ सब को ये बतलाऊ,
पड़ कर चिट्ठी माँ आंबे की पल भी चैन न पाऊ
माहि को चिट्ठी आती रहे फरयाद हमारी है
तेरे भवन से आई माँ इक चिट्ठी प्यारी है,

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/22181/title/tere-bhawan-se-aai-maa-ik-chithi-pyari-hai

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |